4. सामाजिक परिवर्तन के संकेत

- पुरुष प्रधानसमाज में महिला नेतृत्वकी स्वीकृतिबढ़ रही है।
- स्वस्थ पारिवारिकनिर्णय जैसे कि बच्चों की शिक्षा, पोषण और स्वास्थ्य में महिलाओं की भागीदारी।
- अंतर-पीढ़ीगतप्रभाव: जब महिलाएं सशक्त होती हैं, तो उनकी बेटियाँ भी आत्मविश्वास से आगे बढ़ती हैं।

5. विस्तार सेवाओं द्वारा आर्थिक स्वतंत्रता की दिशा में कदम

- महिलाएं अब खुद की नर्सरी, पशुचिकित्सा केंद्र, बकरी पालन, मशरूम यूनिट, डेयरी, आदि चला रही हैं।
- SHG की महिलाएं जैविक सब्जीउत्पादन और मूल्यवर्धन (pickle, papad, jam आदि) के माध्यम से अतिरिक्त आय अर्जित कर रही हैं।
- कुछ क्षेत्रों में महिलाएं कृषि सलाहकार (Para Extension Workers) बनकर अन्य महिलाओं को प्रशिक्षित कर रही हैं।

6. महिला किसानों की चुनौतियाँ - जिन्हें अब भी हल किया जाना बाकी है

- भूमि स्वामित्व अब भी बहुत कम महिलाओं के नाम है।
- कई क्षेत्रों में महिलाएं अब भी पुरुषों की अनुमति के बिना ट्रेनिंग में भाग नहीं ले सकतीं।
- बाज़ार तक सीधी पहुँच और डिजिटल साधनों का सीमित उपयोग।
- सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की जानकारी का अभाव।

7. समाधान और सुझाव

1. लैंगिक समावेशीप्रसार रणनीतिबनाना – हर योजना में महिलाओं का कोटा तय हो।
2. महिला विस्तारकार्यकर्ताओं की नियुक्ति – ग्रामीण महिलाओं को अधिक खुलकर संवाद करने का अवसर मिलेगा।
3. जमीनी स्तरपर महिलानेतृत्व को बढ़ावा देना – ग्राम पंचायत, कृषि समितियों, किसान क्लबों में महिलाओं को नेतृत्व देना।
4. स्थानीय स्तरपर महिलाप्रशिक्षण केंद्रोंकी स्थापना – जिससे दूरी की समस्या दूर हो।
5. बाजारों और मूल्य श्रृंखलाओंमें सीधाप्रवेश – SHG आधारित विपणन केंद्र और महिला FPO बनाना।

8. निष्कर्ष (Conclusion)

कृषि प्रसार सेवाएं केवल जानकारी का आदान-प्रदान नहीं हैं, यह एक संवेदनशील परिवर्तन की प्रक्रिया है, जो महिला किसानों को ज्ञान, संसाधन, निर्णय शक्ति और आत्म-सम्मान देती है। यदि नीति और कार्यान्वयन स्तर पर महिला-केंद्रित दृष्टिकोण को अपनाया जाए, तो वे न केवल अपनी आर्थिक स्थिति सुधारेंगी, बल्कि सम्पूर्ण समाज की प्रगति में भी उत्प्रेरक बनेंगी।

1. महिलाओं की भूमिका: परंपरा से नेतृत्व तक

ग्रामीण भारत में महिलाएं सदियों से कृषि कार्यों में योगदान देती रही हैं – जैसे कि बीज छांटना, बुवाई, निराई-गुड़ाई, कटाई, भंडारण और पशुपालन। परंतु उनकी भूमिका अक्सर "अदृश्य किसान" के रूप में मानी जाती है। कृषि प्रसार सेवाएं इन छुपी हुई क्षमताओं को पहचानकर उन्हें नेतृत्व, निर्णय और नवाचार के केंद्र में लाने का कार्य कर रही हैं।

2. प्रमुख विस्तार सेवाएं जो महिलाओं के लिए चल रही हैं

योजना / कार्यक्रम	उद्देश्य
महिला कृषि सशक्तिकरण परियोजना (MKSP)	महिला किसानों की पहचान, कौशल विकास और संसाधन उपलब्ध कराना
कृषि विज्ञान केंद्रों (KVKs)	महिलाओं के लिए विशेष प्रशिक्षण जैसे किचन गार्डनिंग, मशरूम उत्पादन, बकरी पालन
राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM)	SHG के माध्यम से महिलाओं को कृषि व गैर-कृषि उद्यमों में जोड़ा जाता है
राष्ट्रीय महिला किसान दिवस (15 अक्टूबर)	महिला किसानों के योगदान को मान्यता देना

3. महिला सशक्तिकरण में ICT (सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी) की भूमिका

- मोबाइल आधारितसेवाएं: जैसे mKisan, Kisan Suvidha, AgriApp आदि से खेती से जुड़ी जानकारियाँ सरल भाषा में मिलती हैं।
- IVRS (Interactive Voice Response System):साक्षरता की बाधा को दूर करते हुए ऑडियो संदेशों द्वारा जानकारी देना।
- रेडियो और कम्युनिटी रेडियो: महिलाओं के लिए विशेष कार्यक्रम जिनमें सफल महिला किसानों की कहानियाँ साझा की जाती हैं।

क्रमांक: COOP/2023/KOTA/201080/25/13

एग्रीकल्चर फ़ोरम फॉर टेक्निकल एजुकेशन ऑफ़ फार्मिंग सोसायटी

कोटा, राजस्थान

कृषि प्रसार सेवाओं के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण

संकलन

डॉ. दिव्या चौधरी
कृषि विस्तार और संचार विभाग, सहायक प्रोफेसर,
राजकीय कृषि कॉलेज, बस्सी, चित्तौड़गढ़।

कमलेश चौधरी
कृषि विस्तार और संचार विभाग, कृषि कॉलेज, स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर।